अध्याय 6

नाज़ीर और याजकीय आशीष

पिछले अध्याय के अनुसार, गिनती 6 में फिर से शुद्धता का उल्लेख किया गया है। परमेश्वर ने मूसा के माध्यम से नाज़ीरों से सम्बन्धित उनके नियमों को दर्शाया। ये वे लोग थे जिन्होंने अपनी प्रतिज्ञाओं के बारे में शुद्धता के विशेष नियमों का पालन किया (6:1-21)। यह भाग (अध्याय 5; 6) परमेश्वर की आशीष, एक आशीष की प्रार्थना को निर्देशित करता है के साथ समाप्त होता है जिसे याजकों द्वारा इस्राएल को सुनाया जाता था (6:22-27)।

नाज़ीरों का मन्नत (6:1-21)

मन्नत के लिये आवश्यक विधि (6:1-8)

[1]फिर यहोवा ने मूसा से कहा, [2]"इस्राएलियों से कह कि जब कोई पुरुष या स्त्री नाज़ीर की मन्नत, अर्थात् अपने को यहोवा के लिये न्यारा करने की विशेष मन्नत माने, [3]तब वह दाखमधु आदि मदिरा से अलग रहे; वह न दाखमधु, और न मदिरा का सिरका पीए, और न दाख का कुछ रस भी पीए, वरन् दाख न खाए, चाहे हरी हो चाहे सूखी। [4]जितने दिन वह न्यारा रहे उतने दिन तक यह बीज से ले छिलके तक, जो कुछ दाखलता से उत्पन्न होता है, उसमें से कुछ न खाए। [5]फिर जितने दिन उसने न्यारे रहने की मन्नत मानी हो उतने दिन तक वह अपने सिर पर छुरा न फिराए; और जब तक वे दिन पूरे न हों, जिनमें वह यहोवा के लिये न्यारा रहे, तब तक वह पवित्र ठहरेगा, और अपने सिर के बालों को बढ़ाए रहे। [6]जितने दिन वह यहोवा के लिये न्यारा रहे उतने दिन तक किसी लोथ के पास न जाए। [7]चाहे उसका पिता, या माता, या भाई, या बहिन भी मरे, तौभी वह उनके कारण अशुद्ध न हो; क्योंकि अपने परमेश्वर के लिये न्यारे रहने का चिह्न उसके सिर पर होगा। [8]अपने न्यारे रहने के सारे दिनों में वह यहोवा के लिये पवित्र ठहरा रहे।"

आयतें 1, 2. शब्द **नाज़ीर** (נָזִיר, *नाज़ीर;* 6:2, 19, 21), जिसका अर्थ है "अलग किया हुआ," जिसकी उत्पत्ति इब्रानियों क्रिया נָזַר *(नाज़र)* से होता है, जो किसी मनुष्य को **न्यारा करने की** या पवित्र करने के निर्णय के विशेष उद्देश्य को इंगित करता है। जैसा कि यह शब्द और पाठ दोनों (6:1-21) सुझाव देते हैं, एक नाज़ीर वह होता था जो एक निश्चित अवधि के लिये **परमेश्वर के लिये** न्यारा करने

के लिये मन्नत मानता था जिसका तात्पर्य है कि वह दूसरे लोगों से अलग किया जाता था। पाठ नाज़ीर **मन्नत** की उत्पत्ति के बारे में नहीं बताता है; बल्कि इन नियमों को एक पूर्ववर्ती अभ्यास को नियंत्रित करने के लिये दिया गया था।

एक **स्त्री** नाज़ीर बन सकती है। इस पूरे अध्याय में, शब्द "वह" किसी मनुष्य का उल्लेख करने का एक सामान्य तरीका है, चाहे वह पुरुष हो या स्त्री, जो परमेश्वर के सामने न्यारा होने की मन्नत मानता हो।

आयतें 3, 4. नाज़ीरों पर उनके न्यारा होने के समय तीन माँगों को लागू दिया जाता था, और ये सभी बहुत कठिन होते थे। सबसे पहले, वह **न दाखमधु, और न मदिरा का सिरका पी** सकता था। इन नशीली पेय पदार्थों के खतरों के बारे में पुराने नियम (नीति. 20:1; 23:29-35) में अच्छी तरह से चित्रण किया गया है। नादाब और अबीहू के पाप और मृत्यु के बाद, याजकों को चेतावनी दी गई कि वे तम्बू में सेवा करते वक्त "दाखमधु और मदिरा का सिरका न पीएँ" कहीं ऐसा न हो कि वे मर जाएँ (लैव्य. 10:9)। नाजीरों को केवल "दाखमधु और मदिरा का सिरका" न पीने के लिये नहीं कहा गया था बल्कि वे **न दाख का कुछ रस भी पीए, वरन् दाख न खाए, चाहे हरी हो चाहे सूखी। ... बीज से ले छिलके तक) जो कुछ दाखलता से उत्पन्न होता है, उसमें से कुछ न खाए।** इस प्रकार दाख के सभी उत्पादों और नशायुक्त पेय पदार्थों को पीने के लिये मना किया गया था। **जितने दिन वह न्यारा रहे** उतने दिन के लिये यह मन्नत मानी जाती थी (देखें 6:5-8, 13, 21)।

आयत 5. दूसरा, **अपने सिर पर छुरा न फिरा** [सकते थे]। अपने बालों को काटने के बदले, नाज़ीर को **अपने सिर के बालों को बढ़ाए** रखना था। इससे वह अलग दिखाई देगा, जो उसे समाज के बाकी लोगों से अलग करेगा। यह नियम आधुनिक पाठकों को विचित्र लग सकता है, परन्तु प्राचीन निकट पूर्व में "बाल रीतियों और कानूनी प्रथाओं में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता था।"[1]

आयतें 6, 7. तीसरा, नाज़ीर **किसी लोथ के पास न जाए**। उसे किसी लोथ को छूने और **अशुद्ध** होने से बचे रहना था (देखें 5:2)। यह नियम किसी भी लोथ पर लागू होता है, यहाँ तक कि परिवार के किसी भी सदस्य पर जो मर चुका होता था, चाहे **उसका पिता, या माता, या भाई, या बहिन** क्यों न हो।

आयत 8. परमेश्वर के लिये पवित्र किया जानेवाला और, कुछ हद तक, दूसरों से अलग किया गया, नाज़ीर **यहोवा के लिये पवित्र** ठहरता था। "नाज़ीर," "न्यारा किया गया," "अलग किया गया," और "पवित्र" अभिव्यक्तियों का रूप था जो इस भाग में "पवित्र" शब्द का अर्थ है: यह वह मनुष्य (या वस्तु) होता था जो विशेष रूप से परमेश्वर को समर्पित किया जाता था।

अशुद्ध हो जाने पर (6:9-12)

[9]"यदि कोई उसके पास अचानक मर जाए, और उसके न्यारे रहने का जो चिह्न उसके सिर पर होगा वह अशुद्ध हो जाए, तो वह शुद्ध होने के दिन, अर्थात् सातवें दिन अपना सिर मुड़ाए। [10]और आठवें दिन वह दो पंडुक या कबूतरी के दो

बच्चे मिलापवाले तम्बू के द्वार पर याजक के पास ले जाए, 11और याजक एक को पापबलि, और दूसरे को होमबलि करके उसके लिये प्रायश्चित करे, क्योंकि वह लोथ के कारण पापी ठहरा है। और याजक उसी दिन उसका सिर फिर पवित्र करे, 12और वह अपने न्यारे रहने के दिनों को फिर यहोवा के लिये न्यारा ठहराए, और एक वर्ष का एक भेड़ का बच्चा दोषबलि करके ले आए; और जो दिन इससे पहले बीत गए हों वे व्यर्थ गिने जाएँ, क्योंकि उसके न्यारे रहने का चिह्न अशुद्ध हो गया।"

आयत 9. नाज़ीर को क्या करना होता था यदि वह गलती से अपने न्यारे किए गए समय में अशुद्ध हो जाए? यदि वह किसी लोथ के सम्पर्क में आ जाए (जैसे कि कोई **उसके पास अचानक मर जाए**), तो वह अशुद्ध हो जाता था और सात दिनों तक अशुद्ध रहता था। **सातवें दिन**, वह **शुद्ध हो** जाता था, और उस दिन उसे **अपना सिर मुड़वाना** होता था।

आयतें 10, 11. आठवें दिन उसे **दो पंडुक या कबूतरी के दो बच्चे** मिलापवाले तम्बू में अपनी अशुद्धता के छुटकारे के लिये लाना पड़ता था (देखें लैव्य. 1:14; 5:7, 11; 12:8)। वह उन्हें **मिलापवाले तम्बू के द्वार** पर **याजक को** देता था। इन पक्षियों में से **एक पापबलि** के रूप में चढ़ाया जाता था (देखें 6:16)। हमें यह निष्कर्ष निकालना नहीं हैं कि नए नियम के अनुसार शब्द का अर्थ लोथ द्वारा नाज़ीर का अशुद्ध होना, एक पाप था। उन्होंने अनजाने में अशुद्ध हो जाने का अनुभव किया, और कोई पाप नहीं किया गया था। जबकि, नियम के अधीन, पापों की शुद्धता की स्थिति में लोगों के निदान के लिये कभी-कभी "पाप बलि" की आवश्यकता होती थी, भले ही कोई पाप नहीं किया गया था। उदाहरण के रूप में, एक स्त्री का बच्चे को जन्म देने के बाद, उसे "पापबलि" चढ़ाना होता था (लैव्य. 12:7, 8)।[2] इसलिये, नाज़ीर द्वारा "पापबलि" के बलिदान से यह संकेत नहीं मिलता है कि वह किसी भी नैतिक या धार्मिक अपराध का दोषी था।

दूसरा पक्षी **होमबलि** के लिये था। ये बलिदान **उसके लिये प्रायश्चित** के लिये थे, परन्तु उसे **अपने सिर पवित्र करने** और अपनी मन्नत को फिर से नया करने के लिये भी था।

आयत 12. नाज़ीर को **एक वर्ष का एक भेड़ का बच्चा** चढ़ाना पड़ता था क्योंकि उसने स्वयं को पवित्र करने की वास्तविक इच्छा से कुछ समय के लिये अपने आपको पुनः समर्पित किया था। **जो दिन बीत गए** जिसमें उसके अशुद्ध होने से पहले जो सेवा की थी, वह गिनती नहीं होगी **क्योंकि उसके न्यारे रहने का चिह्न अशुद्ध हो गया था**, इसलिये उसने अपनी मन्नत पूरी करने के लिये फिर से शुरू किया।

मन्नत का पूरा होना (6:13-21)

13"फिर जब नाज़ीर के न्यारे रहने के दिन पूरे हों, उस समय के लिये उसकी

यह व्यवस्था है; अर्थात् वह मिलापवाले तम्बू के द्वार पर पहुँचाया जाए, 14और वह यहोवा के लिये होमबलि करके एक वर्ष का एक निर्दोष भेड़ का बच्चा, पापबलि करके एक वर्ष की एक निर्दोष भेड़ की बच्ची, और मेलबलि के लिये एक निर्दोष मेढ़ा, 15और अखमीरी रोटियों की एक टोकरी, अर्थात् तेल से सने हुए मैदे के फुलके, और तेल से चुपड़ी हुई अखमीरी पपड़ियाँ, और उन बलियों के अन्नबलि और अर्घ; ये सब चढ़ावे समीप ले जाए। 16इन सब को याजक यहोवा के सामने पहुँचाकर उसके पापबलि और होमबलि को चढ़ाए, 17और अखमीरी रोटी की टोकरी समेत मेढ़े को यहोवा के लिये मेलबलि करके, और उस मेलबलि के अन्नबलि और अर्घ को भी चढ़ाए। 18तब नाज़ीर अपने न्यारे रहने के चिह्नवाले सिर को मिलापवाले तम्बू के द्वार पर मुण्डाकर अपने बालों को उस आग पर डाल दे जो मेलबलि के नीचे होगी। 19फिर जब नाज़ीर अपने न्यारे रहने के चिह्नवाले सिर को मुण्डा चुके तब याजक मेढ़े का पकाया हुआ कन्धा, और टोकरी में से एक अखमीरी रोटी, और एक अखमीरी पपड़ी लेकर नाज़ीर के हाथों पर धर दे, 20और याजक इनको हिलाने की भेंट करके यहोवा के सामने हिलाए; हिलाई हुई छाती और उठाई हुई जाँघ समेत ये भी याजक के लिये पवित्र ठहरें; इसके बाद वह नाज़ीर दाखमधु पी सकेगा। 21नाज़ीर की मन्नत की, और जो चढ़ावा उसको अपने न्यारे होने के कारण यहोवा के लिये चढ़ाना होगा उसकी भी यही व्यवस्था है। जो चढ़ावा वह अपनी पूंजी के अनुसार चढ़ा सके, उससे अधिक जैसी मन्नत उसने मानी हो, वैसे ही अपने न्यारे रहने की व्यवस्था के अनुसार उसे करना होगा।"

आयतें 13, 14. नाज़ीर के विवरण बारे में अनुच्छेद का तीसरा भाग कि क्या किया जाना था, **जब** [नाज़ीर के] **न्यारे रहने के दिन पूरे हो** जाते थे। जब उसकी मन्नत पूरी हो जाती थी, तो उसे **मिलापवाले तम्बू के द्वार पर** एक भेंट **पहुँचाना** होता था। उसे **यहोवा के लिये होमबलि करके एक वर्ष का ... भेड़ का बच्चा, पापबलि करके एक वर्ष की ... भेड़ की बच्ची,** और **मेलबलि के लिये ... मेढ़ा** लाना होता था। परमेश्वर को ग्रहण होने के लिये इन जानवरों को **निर्दोष** होना था।

आयत 15. बलिदान उत्तम अनाज और दाखमधु के साथ चढ़ाया जाना था: **अखमीरी रोटियों की एक टोकरी, अर्थात् तेल से सने हुए मैदे के फुलके, और तेल से चुपड़ी हुई अखमीरी पपड़ियाँ, और उन बलियों के अन्नबलि और अर्घ; ये सब चढ़ावे समीप ले जाए।**

आयतें 16-18. पापबलि और **होमबलि** के लिये सामग्री **याजक** को दिए जाते थे, जो **अखमीरी रोटी की टोकरी** के साथ **उन्हें यहोवा के सामने पहुँचाता** था। **नाज़ीर** को ... **सिर को मिलापवाले तम्बू के द्वार पर मुण्डाना** भी था। ... अपने **बालों को उस आग पर डाल** देना था जो **मेलबलि के नीचे** थी। देवताओं को बालों का बलिदान करना प्राचीन जगत में कोई असामान्य बात नहीं थी। आर. डेनिस कोले ने दो एक जैसे उदाहरणों का विवरण दिया है:

> नौवीं सदी के ई.पू. सिप्रियोट के पात्र लेख में, एक व्यक्ति के बाल एस्तारते

को एक स्मरणीय भेंट के रूप में प्रस्तुत किया गया था। एक यूनानी युग में मन्दिर की मरम्मत और पुनर्समर्पण में, राजा के बाल को एक विशेष मन्नत पात्र में स्थानीय देवता को भेंट के रूप में प्रस्तुत किया गया था।[3]

आयतें 19, 20. याजक को प्रस्तुत किए गए भेंट का एक हिस्सा खाने का विशेषाधिकार था। **मेढ़े का पकाया हुआ कन्धा**, और नाज़ीर के **अपने चिह्नवाले सिर को मुण्डा** चुकने के बाद, **टोकरी में से एक अखमीरी रोटी**, याजक को **एक अखमीरी पपड़ी** लेकर **नाज़ीर के हाथों पर धर देना** होता था। इसके बाद, याजक इनको **हिलाने की भेंट करके यहोवा के सामने हिलाता** था। भोजन **... छाती और ... जाँघ समेत ये भी याजक के लिये पवित्र** ठहरता था। "हिलाने की भेंट" के स्थान पर, कुछ संस्करणों में "ऊँचे पर उठाई भेंट" है। हिलाने की भेंट को इस ओर से उस ओर लहराते हुए, याजक उसे वेदी की ओर ऊपर उठाता था, जो प्रतीकात्मक रूप से इसे यहोवा को समर्पित करता था, और फिर उसे वापस अपनी ओर ले आता था।[4]

नाज़ीर मन्नत को पूरा करने के लिये आवश्यक भेंट महंगी होती थीं। कभी-कभी धनी लोग गरीबों का जो मन्नत मानते थे के खर्च उठाते थे। समारोह के बाद, **नाज़ीर** एक बार फिर **दाखमधु पी** सकता था।

आयत 21. नाज़ीर के बारे में लेख, सारांश विवरण के साथ समाप्त होता है: **नाज़ीर की मन्नत की, और जो चढ़ावा उसको अपने न्यारे होने के कारण यहोवा के लिये चढ़ाना होगा उसकी भी यही व्यवस्था है। जो चढ़ावा वह अपनी पूंजी के अनुसार चढ़ा सके, उससे अधिक जैसी मन्नत उसने मानी हो, वैसे ही अपने न्यारे रहने की व्यवस्था के अनुसार उसे करना होगा।** वाक्यांश **जो चढ़ावा वह अपनी पूंजी के अनुसार चढ़ा सके** इंगित करता है कि नाज़ीर, कर सकता था और अकसर किया करता है, व्यवस्था के अनुसार आवश्यक भेंटों से अधिक भेंटों को लाता था।

पवित्रशास्त्र में नाज़ीरों के बारे में और कुछ बातें कही गई हैं। कि उनका अस्तित्व था, जो विलापगीत 4:7 और आमोस 2:11, 12 में उनके संदर्भों से स्पष्ट है। नियम यह था कि वह स्वयं के लिये मन्नत मानकर नाज़ीर बन जाता था जो उसे केवल कुछ समय तक पवित्र रखता था। समय अवधि इतनी लंबी होनी चाहिए थी कि उसके लम्बे बाल ध्यान देने योग्य हो जाता था। यहूदी विद्वानों के अनुसार, नाज़ीर के रूप में स्वयं को पवित्र करने के लिये कम से कम तीस दिन का समय होता था,[5] परन्तु कोई भी अपने माता-पिता द्वारा किए गए मन्नत के माध्यम से जीवन भर के लिये नाज़ीर बन सकता था। शिमशोन को उसके जन्म के समय से ही नाज़ीर कहा गया (न्यायियों 13:4, 5, 7; 16:17), यद्यपि वह नाज़ीर की मन्नत की आवश्यकताओं को पूरा नहीं कर पाया। उसने सिंह की लोथ को छूकर, पलिश्तियों के साथ दाखमधु पीने के उत्सव में भाग लेकर और दलीला को अपने बालों को मूँडाने की अनुमति देकर अपनी मन्नत तोड़ दी (न्यायियों 14:8-10; 16:15-22)। नाज़ीर होने से सम्बन्धित नियमों का पालन करने में उसकी विफल हो जाना कोई आश्चर्य की बात नहीं है, क्योंकि न्यायियों के समय पर मूसा की

व्यवस्था का पालन करने के बदले अकसर तोड़ दिया जाता था।

क्योंकि वे जन्म से यहोवा के लिये न्यारा किए गए थे, इसलिये शमूएल और यूहन्ना बपतिस्मादाता को भी नाज़ीर माना जाता था।[6] शमूएल ने अपने सिर पर छुरा फिरने नहीं दिया (1 शमूएल 1:11), और यूहन्ना ने दाखरस और मदिरा कभी न पीया (लूका 1:15)। कभी-कभी माना जाता है कि हन्नाह ने भी नाज़ीर की मन्नत मानी थी (लूका 2:36-38)। पौलुस ने अपनी दूसरी प्रचार यात्रा (प्रेरितों 18:18) के दौरान स्पष्ट रीति से इस तरह की मन्नत मानी थी। अकसर यह माना जाता है कि प्रेरितों 21:22-26 में दिए गए चार यहूदी मसीहियों की मन्नत नाजीर होने की मन्नत थी।

परमेश्वर ने व्यवस्था में इससे सम्बन्धित विधियों को शामिल करके नाज़ीर मन्नत के बारे में अपनी स्वीकृति क्यों दी? नाज़ीरियों ने किस उद्देश्य को पूरा किया? शायद मन्नत मानने और परमेश्वर के लिये न्यारा किए जाने की इच्छा मनुष्यों के लिये सहज है, और ये नियम केवल उसी इच्छा को पहचानते और उसे कार्यान्वित करते हैं। ऐसा हो सकता है कि, न्यारा किए जाने के समय के दौरान, नाज़ीरों ने स्वयं को विशेष रूप से परमेश्वर की सेवा के लिये समर्पित किया था। शिमशोन, शमूएल और यूहन्ना बपतिस्मादाता के साथ हन्नाह, पौलुस और प्रेरितों 21 में चार यहूदी मसीहियों के उदाहरण, इस विचार का समर्थन कर सकते हैं। एक और सम्भावना यह है कि परमेश्वर चाहता था कि नाज़ीरों को इस प्रकार के अलगाव के जीवित उदाहरणों के रूप में सेवा करनी चाहिए, जिसकी अपेक्षा उसने इस्राएलियों से की थी। नाज़ीरों ने बाकी लोगों को पवित्रता के सिद्धान्तों को साकार रूप देने के लिये प्रोत्साहित करने में सहायता की जो समुदाय को पूरी तरह से परमेश्वर के पवित्र राष्ट्र बनने की अनुमति देती है।

हारून का आशीर्वाद देने की विधि (6:22-27)

[22]फिर यहोवा ने मूसा से कहा, [23]"हारून और उसके पुत्रों से कह कि तुम इस्राएलियों को इन वचनों से आशीर्वाद दिया करना: [24]यहोवा तुझे आशीष दे और तेरी रक्षा करे; [25]यहोवा तुझ पर अपने मुख का प्रकाश चमकाए, और तुझ पर अनुग्रह करे; [26]यहोवा अपना मुख तेरी ओर करे, और तुझे शांति दे। [27]इस रीति वे मेरे नाम को इस्राएलियों पर रखें, और मैं उन्हें आशीष दिया करूँगा।"

नाज़ीर से सम्बन्धित नियमों के बाद एक अनुच्छेद आता है जिसे अकसर "याजकीय आशीष" या "हारून का आशीर्वाद" कहा जाता है।[7] पुस्तक के इस स्थान पर यह आशीष क्यों पाया जाता है? यद्यपि हम निश्चित रूप से उस प्रश्न का उत्तर नहीं दे सकते हैं, परन्तु यह शुद्धता या पवित्रता (अध्याय 5; 6) के विषय में समर्पित लेखों के लिये एक उपयुक्त निष्कर्ष प्रतीत होता है। शायद यह बताता है कि यदि इस्राएल ने "पवित्र समाज" के रूप में अपनी भूमिका पूरी की है, तो लोगों को परमेश्वर द्वारा आशीष दिया जाएगा। इसके अलावा, पुस्तक के अगले तीन अध्याय

दूसरे विषय पर प्रकाश डालते हैं: तम्बू का पूरा होना और उस महत्वपूर्ण अवसर से जुड़ी घटनाएँ। याजकीय आशीष इसलिये एक संकेत देता है कि पुस्तक के एक भाग का अन्त हो चुका है और दूसरे भाग की शुरुआत हो चुकी है।

जैसा कि कई संस्करणों में दर्शाया गया है, आशीष कविता के रूप में लिखा गया है (6:24-26)। आयत में तीन कथन होते हैं, जिनमें से प्रत्येक "यहोवा" (יהוה, *YHWH*, या "याहवेह," परमेश्वर का व्यक्तिगत नाम) से शुरू होता है, और फिर कहता है कि वह इस्राएलियों के प्रति दया ("आशीष," "अपने मुख का प्रकाश चमकाए," "अपना मुख तेरी ओर करे") दिखाता है। प्रत्येक कथन उस कथन के अनुमानित परिणामों का अनुरोध करता है ("तेरी रक्षा करे," "तुझ पर अनुग्रह करे" और "तुझे शांति दे")। शब्द "आशीष" और "इस्राएल के पुत्र" आशीष के पहले और बाद में दिखाई देते हैं (6:23, 27)।

स्पष्ट है, यह कविता विस्तारित इब्रानियों समरूपता का प्रयोग करती है; तीन पंक्तियों के सम्बन्धित भाग समानार्थी (या लगभग वैसा ही) हैं और एक-दूसरे को चित्रित करने या व्याख्या करने के काम आते हैं। कविता पूरी तरह से सिखाती है कि इस्राएल यह जानकर विश्राम पा सकता है कि परमेश्वर अपने लोगों को "आशीष" देगा। परम्परा के अनुसार, आशीष के लिये प्रार्थना प्रतिदिन दोहराया जाता था; इस पुनरावृत्ति ने इस्राएलियों को लगातार स्मरण दिलाया किया कि वे परमेश्वर के लोग थे, अपने सभी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये उस पर निर्भर रहते थे। जैसे ही इस्राएल ने सीनै से कूच करके प्रतिज्ञा की भूमि की ओर जाने के लिये कदम बढ़ाया, उन्हें परमेश्वर की आशीष के आश्वासन की आवश्यकता थी इस कार्य को याजकीय प्रार्थना के द्वारा पूरा किया जाता था।

यह कविता गिनती की पुस्तक में शायद सबसे जाना माना भाग है, और इसकी भाषा भजन संहिता में प्रतिबिंबित होता है (देखें भजन 67; 121)। कविता के शब्द पुराने नियम के अब तक के पाए गए सबसे प्राचीन लेखों पर लिखे गए थे। डेनिस टी. ओल्सन ने तर्क दिया कि यह पुरातात्विक प्रमाण याजकीय प्रार्थना की प्रारम्भिक उत्पत्ति की पुष्टि करता है:

> प्राचीन इस्राएल में इस हारून की या याजकीय आशीष का महत्व यरूशलेम में प्रथम मन्दिर काल से हाल के पुरातात्विक निष्कर्षों द्वारा पुष्टि की गई है। 600 ईसा पूर्व काल से मृत लोगों को गाड़े जाने वाले गुफाओं में दो चाँदी के बेलननुमा लेखों की खोज की गई; गिनती 6 में पाई जाने वाली आशीष दो चाँदी के लेखों पर लिखा गया था। ये बाइबल के लेखों के पाए गए सबसे शुरुआती टुकड़े हैं, जो लगभग 400 वर्षों तक बाइबल की मृत सागर लेखों के दस्तावेजों को दर्शाते हैं। यह पुरातात्विक खोज इस्राएल के धार्मिक जीवन में गिनती 6 से याजकीय आशीष की पुरातनता और प्रमुखता की पुष्टि करती है।[8]

आयतें 22, 23. यहोवा ने **मूसा** से, **हारून**, महायाजक और **उसके पुत्रों**, अन्य याजकों को **इस्राएल के पुत्रों को आशीष देने के लिये** निर्देश देने के लिये कहा। प्रार्थना के शब्द वे विशेष शब्द हैं जिन्हें वे लोगों के लिये कहना चाहते थे।

आयत 24. याजकों को कहना होता था, "**यहोवा तुझे आशीष दे और तेरी रक्षा करे।**" यद्यपि शब्द "आशीष दे" (בָּרַךְ, *बारक)* एक सामान्य शब्द है, पुराने नियम के दूसरे लेख इस संदर्भ में इसका क्या अर्थ है उसके लिये विशिष्ट उदाहरण प्रदान करते हैं। परमेश्वर इस्राएलियों को प्रतिज्ञा के देश में भरपूर भोजनवस्तु प्रदान करते हुए आशीष देगा। मेंह बरसाकर, वह उन्हें उनके फलों के वृक्षों, अनाज के खेतों और दाख की बारियों के उपज बहुतायत से देने का आश्वासन देगा। वे उस देश में उन्नति करेंगे, जहाँ उनके कई बच्चे और पशु होंगे (लैव्य. 26:3-13; व्यव. 28:2-14)। "रक्षा करे" (שָׁמַר, *शमार)* परमेश्वर की चिन्ता अपने लोगों पर लगी रहती है को संदर्भित करता है। वह इस्राएलियों पर दृष्टि रखते हुए और उनकी रक्षा करते हुए उनको हानि से बचाएगा, जैसे रात का पहरेदार किसी शहर की रक्षा करता था। वह उन्हें जंगली जानवरों से बचाएगा और युद्ध में उन्हें उनके शत्रुओं पर विजय दिलाएगा। भजन 121:7, 8, जो गिनती 6:24 की भाषा का प्रतीक है, कहता है,

> यहोवा सारी विपत्ति से तेरी रक्षा करेगा;
> वह तेरे प्राण की रक्षा करेगा।
> यहोवा तेरे आने जाने में
> तेरी रक्षा अब से लेकर सदा तक
> करता रहेगा।

आयत 25. इसके अलावा, याजकों को यह कहने का निर्देश दिया गया था, **"यहोवा तुझ पर अपने मुख का प्रकाश चमकाए, और तुझ पर अनुग्रह करे।"** परमेश्वर के "मुख" का संदर्भ एक मानव स्वभाव है जो इस्राएल के प्रति अपनी निकटता और व्यक्तिगत हित को व्यक्त करता है। उस कल्पना के साथ मिलाने का विचार यह है कि परमेश्वर प्रकाश या ज्योति है (भजन 27:1; यशा. 60:19; 1 यूहन्ना 1:5; प्रका. 22:5); उसका मुख उनके लोगों पर "चमकता" रहेगा (भजन 31:16; 67:1; 80:3, 7, 19)। जब परमेश्वर अपने लोगों पर मुस्कराता है, तो वह उन्हें अनुग्रह, छुटकारा और सुरक्षा प्रदान करता है।

आयत 26. अन्त में, याजक को यह कहना था, **"यहोवा अपना मुख तेरी ओर करे, और तुझे शान्ति दे।"** "मुख" के लिये इब्रानियों शब्द (פָּנֶה, *पानेह)* वही शब्द है जो पद 25 में "मुख" का अनुवाद करता है "अपना मुख किसी की ओर करे" या " अपनी आँखें किसी की ओर उठाना" एक मुहावरा है जिसका अर्थ है "की ओर ध्यान देना" (देखें भजन 4:6; 34:15)। कुछ संस्करण अधिक व्याख्यात्मक हैं: "दया से देखना," "अपना दया प्रकट करना।"

याजकीय आशीष का अन्तिम बिंदु शब्द "शान्ति" है (שָׁלוֹם, *शालोम)*। इस जटिल शब्द का अर्थ है "युद्ध के न होने से भी अधिक।" इसमें "समृद्धि," "स्वास्थ्य," "पूर्णता" और "सुरक्षा" के विचार शामिल हैं।[9] "शान्ति" "परमेश्वर का उसके लोगों के लिये सभी अच्छे वरदानों के कुल योग को" दर्शाती है।[10]

आयत 27. इस प्रार्थना को इस्राएली आराधकों के लिये प्रार्थना करना एक बहुत ही महत्वपूर्ण तरीका था कि याजकों ने इस्राएल को परमेश्वर के नाम के अधीन लाया। "**इस रीति वे मेरे नाम को इस्राएलियों पर रखें, और मैं उन्हें आशीष दिया करूँगा।**" याजकों को अपने लोगों पर परमेश्वर का नाम "रखना" था। आशीष के भीतर, तीन बार "परमेश्वर" दोहराया जाता है और प्रत्येक पंक्ति में कर्ता के रूप में कार्य करता है। वह वही है जो "आशीष देगा," "रक्षा करेगा," "चमकाएगा," "अनुग्रह करेगा," "अपना मुख तेरी ओर करेगा" और "शान्ति देगा।" जब याजक इस्राएल को आशीष कह सुनाते थे, तो परमेश्वर वास्तव में उन्हें आशीष देता था। इब्रानी भाषा पाठ में, "मैं" बहुत प्रभावशाली है।

अनुप्रयोग

हमारे शब्द कितने अच्छे हैं? (6:1-8)

परमेश्वर हमेशा हमारे द्वारा कहे जानेवाले शब्दों के बारे में चिन्ता करता है। यीशु ने एक बार यह बात कही:

> क्योंकि जो मन में भरा है, वही मुँह पर आता है। भला मनुष्य मन के भले भण्डार से भली बातें निकालता है, और बुरा मनुष्य बुरे भण्डार से बुरी बातें निकालता है। और मैं तुम से कहता हूँ कि जो जो निकम्मी बातें मनुष्य कहेंगे, न्याय के दिन वे हर एक उस बात का लेखा देंगे (मत्ती 12:34-36)।

परमेश्वर विशेष रूप से चिन्तित था जब लोगों के शब्द उसकी ओर निर्देशित होते थे कि वे कहने या करने के प्रति किस प्रकार वचनबद्ध होते थे। इस तरह के कथन के लिये बाइबल का शब्द "मन्नत" है। गिनती 6:1-8 में, मूसा ने साधारण इस्राएली द्वारा मन्नत मानने के बारे में लिखा था। इसे "नाज़ीर की मन्नत" कहा जाता था (6:2)। यह स्वयं की इच्छा का मामला था, न कि मूसा के नियम का आदेश। परन्तु, यह किसी भी व्यक्ति के लिये भक्ति और धार्मिकता का अभ्यास करने का अवसर था। मन्नत केवल थोड़े समय के लिये माननी होती थी।

यीशु ने अपने पहाड़ी उपदेश में फरीसियों की मूर्खता को सही किया क्योंकि उसने परमेश्वर के सामने मन्नत और शपथ के प्रश्न को सम्बोधित किया (मत्ती 5:33-37)। वे मन्नत मान रहे थे और उन्हें हल्के में ले रहे थे। परमेश्वर ने उनके कार्यों पर ध्यान दिया जो कि एक गम्भीर मामला था। जो लोग परमेश्वर के साथ अपने समर्पण के प्रति गम्भीर थे उनके उदाहरण नए नियम में देखे जाते हैं। ये उदाहरण भी उन प्रतिज्ञाओं के बारे में परमेश्वर की गम्भीरता को दर्शाते हैं जिन्होंने इस तरह की प्रतिज्ञाएँ की थीं। प्रेरितों 4:34-37 में, आवश्यकता में पाए जानेवाले भाइयों के लिये यरूशलेम में कुछ पवित्र लोगों ने एक स्वैच्छिक योगदान दिया था। परन्तु, जब इन स्वैच्छिक प्रतिज्ञाओं को परमेश्वर और प्रेरितों की उपस्थिति में किया जाता था, तो उन्हें पूरा करने की उनसे अपेक्षा की जाती थी। हनन्याह और सफीरा की झूठ और बाद में उनकी मृत्यु दर्शाती हैं कि परमेश्वर एक स्वैच्छिक प्रतिज्ञा के बारे

में भी गम्भीर था (प्रेरितों 5:1-10)। बाद में प्रेरितों में, शाऊल और बरनबास को आत्मा और सेवकाई के उद्देश्य को पूरा करने के लिये अन्ताकिया की कलीसिया के द्वारा अलग किया गया था। इस सुसमाचारवादी प्रयास के समर्पण के इस समय के दौरान पूरी कलीसिया ने उपवास और प्रार्थना की (प्रेरितों 13:3)। बाद में अपनी सेवा में, पौलुस को कुरिन्थियों की कलीसिया में एक समस्या का समाधान करना पड़ा। कुछ दम्पत्ति का एक दूसरे से अलग होने की अवधि बहुत अधिक समय तक चल रही थी, और वैवाहिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा था (1 कुरि. 7:1-5)। याकूब ने प्रतिज्ञाओं के प्रति परमेश्वर के रवैये को समझाया। हमारे वायदे और प्रतिज्ञा उसके लिये सरल होनी चाहिए: "... तुम्हारी बातचीत हाँ की हाँ, और नहीं की नहीं हो, कि तुम दण्ड के योग्य न ठहरो" (याकूब 5:12)।

कोई पूछ सकता है, "फिर मुझे किस तरह की बातों को परमेश्वर के लिये मन्नत माननी चाहिए?" शायद हम यह प्रश्न देखकर अपने उचित परिप्रेक्ष्य में प्रश्न रख सकते हैं जो उसके लिये एक मूर्खतापूर्ण मन्नत हो। उदाहरण के लिये, यह मानना मूर्खता होगा कि हम अपने बपतिस्मा के बाद या क्षमा के लिये की गई हमारी तुरन्त की प्रार्थना के बाद कभी पाप नहीं करेंगे। परमेश्वर हमारी मानवता और शैतान की दृढ़ता को जानता है। यह एक असम्भव मन्नत होगा, चाहे हमारी इच्छा कितनी बड़ी क्यों न हो।

क्या हम कभी परमेश्वर के प्रति हमारी प्रतिबद्धताओं से बाहर निकल पाते हैं? इस प्रवृत्ति को एक ऐसे व्यक्ति द्वारा दिखाया गया है जो विमान यात्रा पर था और तब विमान में गम्भीर गड़बड़ी आ गई। इस यात्री के बगल की सीट में बैठे एक उपदेशक ने इस व्यक्ति प्रार्थना करते हुए सुना। उस व्यक्ति ने वचन दिया, "यदि आप मुझे तूफान से ले बाहर निकालते हैं, तो एक व्यवसायी के रूप में मैं आपको अपनी सारी सम्पत्ति का आधा हिस्सा दूँगा।" जल्द ही विमान खराब मौसम से बाहर निकल आया, और नीचे आने पर प्रचारक ने उस व्यक्ति को उसकी प्रतिज्ञा स्मरण दिलाई। आदमी ने जवाब दिया, "मैंने अभी परमेश्वर से एक अच्छा सौदा किया है। यदि मैं फिर कभी विमान पर जाता हूँ, तो मैं उसे अपनी सारी सम्पत्ति दूँगा!" यह एक हास्यपूर्ण कहानी हो सकती है, परन्तु जिस जो वचन हमने परमेश्वर को दिया है उसके लिये क्या हम तकनीकी रूप से बदल सकते हैं? परमेश्वर के प्रति हमारे भण्डारी होने में, क्या हमने उसे एक निश्चित राशि देने शपथ खाई है और फिर कम दे दिया हो? क्या हमने कलीसिया की एक परियोजना को पूरी करने का वचन दिया है और फिर ऐसा करने में असफल रहे? परिस्थितियाँ हमेशा उत्पन्न होती हैं जो हमारी योजनाओं में कुछ अस्थायी परिवर्तन कर सकती हैं, परन्तु जब हम अपने वचन पर वापस लौटते हैं तो परमेश्वर प्रसन्न होता है? हमारा शब्द कितना उपयोगी है?

अपने दिए गए वचनों को बनाए रखना हमारे लिये कठिन क्यों है? इसके कई कारण दिए जा सकते हैं। सबसे पहले, हम साधारण रूप से स्वयं को हम कार्य के लिये पवित्र नहीं करते हैं। हम कुछ विशेष बातों को पूरा करने के लिये दूसरी बातों को किनारे नहीं करते हैं। अन्य चिन्ताएँ हमारे समय और ध्यान को दबाती हैं। हम

अकसर आत्मिक परियोजना को प्राथमिकता नहीं देते हैं। दूसरा, शैतान हमें बाधा डालने का प्रयास करेगा। 1 थिस्सलुनिकियों 2:18 में, पौलुस ने कहा कि शैतान ने उसे एक से अधिक अवसरों में बाधा डाली। शैतान हममें वह सब कुछ करता है जो हमें परमेश्वर की इच्छा पूरी करने से रोक सकता है। जब शैतान हमारे विचारों पर काम करता है, तो हम निराश हो जाते हैं और हमारे कार्यों को पूरा नहीं कर सकते हैं। वह हमें स्वार्थ से भरने का प्रयास करता है ताकि हम परमेश्वर की इच्छा के बदले अपनी इच्छाओं के बारे में सोचना शुरू कर दें।

परमेश्वर को किए प्रतिज्ञाओं को स्वेच्छा से बनाए रखने और पूरा करने के लिये हमें कैसे चुनौती दी जा सकती है? हमें उन बातों की सूची रखनी होगी जो हम उसे समर्पित कर सकते हैं। पौलुस ने तीमुथियुस को स्वयं को अनुशासित रखने को कहा "भक्ति की साधना कर। क्योंकि देह की साधना से कम लाभ होता है, पर भक्ति सब बातों के लिये लाभदायक है, क्योंकि इस समय के और आनेवाले जीवन की भी प्रतिज्ञा इसी के लिये है" (1 तीमु. 4:7, 8)।

अगली बात, आहार या व्यायाम की तरह, हमें कम समय की रूपरेखा में हमारे प्रतिबद्धता को बनाए रखने की आवश्यकता है। यदि हमने पहले ऐसा नहीं किया है तो हमें प्रतिदिन वर्ष भर बाइबल पढ़ने की शपथ नहीं लेनी चाहिए। नाज़ीर की तरह, हम तीस दिन प्रयत्न कर सकते हैं। उस समय का अन्त होते होते, हम एक और बार तीस दिन तक प्रयत्न कर सकते हैं, और जल्द ही यह एक वर्ष पूरा हो जाएगा। यदि हम छोटे छोटे कदम उठाते हैं, तो हम छोटी छोटी जीत में आनन्द ले सकते हैं। छोटे कदम जल्द ही बड़े हो जाएँगे।

अन्त में, हमें लागत की गिनती करनी चाहिए। इस शपथ को पूरा करने के लिये क्या क्या लगेगा? यह जानना कि कौन कौन सी बाधाएँ उत्पन्न हो सकती हैं और हमें किन किन बातों को छोड़ना होगा, यही प्रतिज्ञा को पूरा करने की आधी लड़ाई है।

उपसंहार। परमेश्वर गम्भीरता से उसके लिये हमारी प्रतिज्ञाओं को देखता है। वह हमेशा अपनी प्रतिज्ञाओं को पूरा करता है, और जब हम अपना पात्र पूरा कर लेते हैं तो वह हमें आशीष देगा। हम परमेश्वर को क्या देते हैं? उसके लिये जो करने का वचन हमने लिया था उसे पूरा करने में हमारा शब्द कितना अच्छा है? GMT

परमेश्वर के लिये समर्पित (6:1-21)

क्या आप परमेश्वर के लिये समर्पित हैं? नाज़ीर होता था। क्या आप उस हद तक परमेश्वर के लिये समर्पित हैं जितने नाज़ीर गिनती 6:1-21 में थे? इससे पहले कि आप उस प्रश्न का उत्तर दे सकें, आपको समीक्षा करनी चाहिए कि बाइबल के समय में नाज़ीर क्या था।

एक नाज़ीर नासरी जैसा नहीं था; यीशु को नासरी कहा जाता था क्योंकि वह नासरत से था (मत्ती 2:23; देखें प्रेरितों 24:5)। "नाज़ीर" शब्द एक क्रिया से आता है जिसका अर्थ है "पवित्र करना"। एक नाज़ीर वह पुरुष या स्त्री होती थी जो विशेष समय के लिये परमेश्वर के लिये समर्पित होते थे। उस समय, तीन आवश्यक माँगें

थीं: किसी भी प्रकार के मदिरा के सेवन से बचने के लिये, अपने सर को मुण्डाने से बचने के लिये, और लोथ को छूने से बचने के लिये। यदि कोई नाज़ीर जो गलती से लोथ के सम्पर्क में आ जाता था, तो मन्नत को प्रभावी रूप से शुद्ध किया जाना, बलिदान चढ़ाना, और हर बात को फिर से शुरू करना पड़ता था। मन्नत के पूरे होने पर, नाज़ीर को बलिदान चढ़ाना होता था।

यद्यपि यह अनुच्छेद केवल नाज़ीर के बारे में बताता है जो एक निश्चित अवधि के लिये मन्नत मानता था, बाइबल अन्य स्थान भी इंगित करता है कि कुछ अपने माता-पिता द्वारा माने गए मन्नत के कारण जन्म से नाज़ीर थे। शिमशोन इस तरह के "जीवन भर के लिये नाज़ीर" का एक सबसे स्पष्ट उदाहरण है, क्योंकि न्यायियों 13:4, 5 कहता है, शिमशोन को अपनी माता के गर्भ से नाज़ीर होना था। यह शिमशोन के लंबे बाल के महत्व को समझाने में सहायता करता है। शमूएल और यूहन्ना बपतिस्मादाता को भी जीवन भर के लिये नाज़ीर माना जाता है क्योंकि वे जन्म से परमेश्वर को समर्पित थे।

स्पष्ट है, हम नाज़ीर नहीं हैं। पुराने नियम की व्यवस्था का प्रभाव अब नहीं रहा। यहाँ तक कि यदि हम होते, तो हम में से अधिकांश इसके अधीन नहीं होते, क्योंकि यह केवल यहूदियों को दिया गया था। इसलिये, क्या इस मसीही युग में, नाज़ीर या नाज़ीर मन्नत के बारे में क्या कोई समानता पाई जाती है?

एक तरह से, हर मसीही परमेश्वर को समर्पित है। नाज़ीर की तरह, हम भी उसके लिये पवित्र किए गए हैं। हम "पवित्र जन" हैं, जिसका अर्थ है कि हम पवित्र हैं, परमेश्वर के पवित्र उद्देश्य के लिये अलग किए गए हैं (1 पतरस 1:16)। परमेश्वर हमें स्वयं को पूरी तरह से देने के लिये कहता है (मत्ती 6:33; 19:21; 22:37; लूका 14:25-27; रोम. 12:1, 2; गला. 2:20)। पवित्र होने के लिये हम किस बात की आवश्यकता है? सिर्फ तीन बातें ही नहीं, बल्कि सब कुछ! सच्चाई यह है कि हम मसीही हैं, जो मसीह को समर्पित हैं, जो हमारे जीवन के हर पहलू को प्रभावित करना चाहिए-घर और परिवार, काम, खेल, धर्म और निजी विचारों को। जिस प्रकार लोगों को परमेश्वर के लिये समर्पित होने के लिये बुलाया जाता है, हमें ऐसी किसी भी बात से बचने के लिये भी बुलाया जाता है जिससे अशुद्धता उत्पन्न होती है। हमें लोथ के सम्पर्क में आने के बारे में चिन्तित होने की आवश्यकता नहीं है, परन्तु हमें इस पापी संसार की अशुद्धता से बचने के बारे में गम्भीर होना चाहिए (1 यूहन्ना 2:15-17)।

एक और अर्थ में, कुछ मसीही स्वयं को अस्थायी रूप से या जीवन भर के लिये, विशेष तरीके से परमेश्वर की सेवा करने के लिये अलग करते हैं। नया नियम बताता है कि व्यक्तिगत मसीहियों या मसीहियों के समूह ने कभी-कभी परमेश्वर की सेवा में समर्पित होने के लिये अपने नियमित जीवन शैली को त्याग दिया (देखें 1 कुरि. 7:5)। प्रेरितों 13:2, 3; 14:23 में उपवास और प्रार्थना के विशेष समय का उल्लेख किया गया है। इसके अलावा, कुछ ने स्वयं को परमेश्वर की सेवा के लिये पूरी तरह से समर्पित किया है: प्रचारक, मिशनरी, और शायद कुछ विधवाओं ने (विधवा जिन्हें "सूची में रखा गया था"; 1 तीमु. 5:9-14)। आज, हम पूर्णकालिक

प्रचारक या मिशनरी बनने को चुनकर समान जीवन जी सकते हैं। हम मिशन यात्रा या आत्मिक सभा पर या हर सप्ताह कुछ घंटों को सेवकाई में समर्पित करके समर्पण के विशेष समय को अलग कर सकते हैं।

"यहोवा तुझे आशीष दे और तेरी रक्षा करे" (6:22-27)

गिनती 6:24-26 को कलीसिया की सभा में दिए गए गीत या आशीष के रूप में प्रयोग किया जाता है। अधिकतर लोग नहीं जानते कि यह पाठ गिनती में पाया जाता है। बाइबल की पुस्तक में इतनी शानदार यात्रा की खोज करना अटपटा लग सकता है जिसे अकसर अनदेखा किया जाता है। आइए याद रखें कि बाइबल में कम प्रचलित पुस्तक भी खजानों से भरे पड़े हैं।

इस्राएल पर परमेश्वर की आशीष। अपने मूल संदर्भ में, "यहोवा तुझे आशीष दे और तेरी रक्षा करे" परमेश्वर के चुने हुए लोगों पर याजक द्वारा दिए गए आशीष के रूप में कार्य करता था। इस संदर्भ से हम क्या समझ सकते हैं? (1) आशीष परमेश्वर से आता था (6:22)। (2) यह याजक, हारून और उसके पुत्रों (6:23) द्वारा सुनाया जाता था। (3) आशीषों को पाया जाता था वे "परमेश्वर" से "आशीष दे" "रक्षा करे" दया करे या "तुझ पर अपने मुख का प्रकाश चमकाए" "अनुग्रह" करे और लोगों को "शान्ति दे" (6:24-26) के रूप में होते थे। (4) इस आशीष की घोषणा करके, याजक "इस्राएल के पुत्रों पर [परमेश्वर के] नाम घोषणा करते थे" (6:27)। दूसरे शब्दों में, वे परमेश्वर पर उनकी निर्भरता और उनके स्वामित्व को स्वीकार करते थे। (5) यदि याजकों ने यह आशीष सुनाया, या इस प्रार्थना के लिये प्रार्थना की, तो परमेश्वर इस्राएल को आशीष देता था (6:27)।

मसीहियों के लिये परमेश्वर की आशीषें। जबकि व्यवस्था के अधीन परमेश्वर के चुने हुए लोगों को दी गई आशीष, आज उसकी कलीसिया से किए गए वायदों के समान नहीं हैं, कुछ महत्वपूर्ण समरूपता देखी जा सकती हैं:

1. उनकी आशीष महत्वपूर्ण हैं। जीवन में किसी और बात की तुलना में हमें और क्या चाहिए? हमें परमेश्वर द्वारा आशीषित होने की आवश्यकता है! हमें उसी तरह की आशीषों की आवश्यकता है जो इस्राएल के लिये आवश्यक थीं: उसकी दया हो, उससे रक्षा प्रदान हो, उसे प्रसन्न हों, उससे अनुग्रह प्राप्त करें, उसके साथ शान्ति प्राप्त करें। ऐसी आशीषें परमेश्वर से आती हैं; हम स्वयं उनका निर्माण नहीं करते हैं, न ही हम उन्हें दूसरों से प्राप्त कर सकते हैं।

2. मध्यस्थता मसीह के माध्यम से है। व्यवस्था के युग में याजकों ने परमेश्वर के सामने इस्राएल की ओर से मध्यस्थता की; अर्थात्, वे लोगों और परमेश्वर के बीच खड़े रहते थे। हमारे युग में, मसीह हमारा महायाजक है और वह परमेश्वर के सिंहासन से सामने हमारे लिये मध्यस्थता करता है (1 तीमु. 2:5)। इसके अलावा, हम एक याजक हैं (1 पतरस 2:9)। नया नियम हमें एक दूसरे के लिये प्रार्थना करने के लिये भी प्रोत्साहित करता है (याकूब 5:16)। यदि हम में से कुछ अच्छी तरह से नहीं कर रहे हैं, तो क्या ऐसा इसलिये हो सकता है क्योंकि हम में से दूसरे लोग उनके लिये वैसी प्रार्थना नहीं कर रहे हैं जैसा हमें करना चाहिए?

3. प्रार्थना में उसकी आशीष को माँगना चाहिए। क्योंकि हमें इन सभी आशीषों के लिये परमेश्वर की आवश्यकता है, इसलिये आइए हम उनके लिये प्रार्थना करें! जब हम यह करते हैं, हम स्वीकार करते हैं कि हम परमेश्वर के हैं। हम उसके हैं!

4. हमारी प्रार्थनाओं को सुना और उत्तर दिया जाएगा। विश्वास के परमेश्वर ने इस्राएल को दिया, हमने भी यीशु से प्राप्त किया है। उसने कहा, "ढूँढ़ों, तो तुम पाओगे" (मत्ती 7:7)। वह अपनी सामर्थ्य और योजना के अनुसार उत्तर देगा।

उपसंहार। परमेश्वर ने इस्राएल को कितना अद्‌भुत आश्वासन दिया! यदि याजकों ने आशीष सुनाया था और राष्ट्र ने लगातार परमेश्वर की आशीष माँगी थी, तो वे निश्चित रूप से उस आशीष को प्राप्त करते थे। कुछ भी ऐसा नहीं था जो उन्हें न मिला हो - कुछ भी नहीं, अर्थात्, उनके पापमय व्यवहार और विश्वास की कमी को छोड़कर! याजकीय आशीष के बावजूद, इस्राएलियों ने पाप किया, और पीढ़ी ने प्रतिज्ञा के देश में अपनी जगह खो दी। वे परमेश्वर की आशीष की प्रतिज्ञा को अपने अविश्वास और परमेश्वर की अनाज्ञाकारिता से वंचित कर सकते थे!

इसी प्रकार, हमारे पास महान प्रतिज्ञाएँ हैं। यदि हम उसकी सहायता ले लेंगे तो परमेश्वर हमें हमारी कल्पना से परे आशीष देने के लिये तैयार है। जिन सब बातों की प्रतिज्ञा उसने हमसे की है क्या हमें उन्हें देने से कुछ रोक सकता है? संसार का कोई वस्तु हमें उसकी आशीष का आनन्द लेने से रोक नहीं सकता है (रोम. 8:35-39) - कुछ भी नहीं, अर्थात्, हम स्वयं को छोड़कर!

समाप्ति नोट्स

[1]आर. डेनिस कोले, "नम्बर्स," इन *ज़ोंडर्वन इलस्ट्रेटेड बाइबल बैकग्राउन्ड्स कॉमेन्टरी*, वॉल्यूम 1, *उत्पत्ति, निर्गमन, लैव्यव्यवस्था, गिनती, व्यवस्थाविवरण*, एड. जॉन एच. वाल्टन (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: ज़ोंडर्वन, 2009), 349. [2]आर. ई. एवरबेक, "सेक्रिफाइसेस एण्ड ओफ्फेरिंग्स," इन *डिक्शनरी ऑफ दि ओल्ड टेस्टमेंट: पेंटाट्युक,* एड. टी. डेसमंड अलेक्जेंडर एण्ड डेविड डब्ल्यू. बेकर (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोय: इंटरवर्सिटी प्रेस, 2003), 719. [3]कोले, 349. [4]अधिक जानकारी के लिये, देखें जे. मिलग्रॉम, "वेव ऑफरिंग" इन *दि इंटरप्रेटर्स डिक्शनरी ऑफ द बाइबल*, सप्लीमेंट्री वॉल्यूम, कीथ क्रिम (नैशविले: एबिंगडन, प्रेस, 1976), 944-46. [5]जुलियस एच. ग्रीनस्टोन, *गिनती*, द होली स्क्रिपचर्स विद कमेन्ट्री (फ़िलाडेल्फ़िया: जूइश पब्लिकेशन सोसाइटी ऑफ़ अमेरिका, 1939), 58. [6]मिशनाह कहता है कि "शमूएल एक नाज़ीर था" (नाज़ीर 9.5)। मृत सागर लेख (4 क्यू सेम) पर आधारित, एक अन्य संस्करण कहता है, "मैं उसे सदा के लिये नाज़ीर के रूप में दे दूँगी" (1 शमूएल 1:22)। कुछ मानते हैं कि यह मूल पठन था और "नाज़ीर" शब्द को गलती से मासोरेटिक पाठ से छोड़ा गया था। [7]आराधना सभा के अन्त में साधारण रूप में "आशीर्वाद" शब्द का अर्थ है "ईश्वरीय आशीर्वाद का आह्वान" (*अमेरिकन हेरिटेज डिक्शनरी,* चौथा संस्करण [2001]), एस.वी. "बेनेडिक्शन." [8]डेनिस टी. ओल्सन, *गिनती,* इंटरप्रिटेशन (लुइसविले: जॉन नॉक्स प्रेस, 1996), 40-41. चाँदी के लेख की एक छायाचित्र के लिये, देखें कोले, 351. [9]जी. लॉयड कार, "שָׁלֵם *(शालेम),*" इन *थियोलॉजिकल वर्डबुक ऑफ दि ओल्ड टेस्टमेंट*, एड. आर. लैर्ड हैरिस, ग्लेसन एल. आर्चर, जूनियर, एण्ड ब्रूस के. वाल्टके (शिकागो: मूडी प्रेस, 1980), 2:931. [10]गॉर्डन जे. वेनहैम, *गिनती*, द टिंडेल ओल्ड टेस्टामेंट कमेंट्रीज (डाउनर्स ग्रोव, इलनॉयसः इंटर-वर्सिटी प्रेस, 1981), 90.